भजन

तर्ज– क्या मिलिये ऐसे लोगों से

एक सहारा तेरा प्रीतम, और सहारा कोई नहीं
तुम ही हो महबूब हमारे,और हमारा कोई नहीं

1 क्या लेना क्या देना ये,खुदगर्जी का संसार है
अपनी तो कायम खुशियां,प्रीतम का सच्चा प्यार है
नजरों में तेरा ही नजारा, और नजारा कोई नहीं

2 श्री निजघर का आनंद देने वाले, हो तुम धामधनी
निसबत का सुख लेने वाली, रूह आपकी है अपनी
रंगमहल की इस लीला को, जाननहारा कोई नहीं

3 पर्दा ए फरामोशी हटाओ, तो तुमसे कोई बात करे
हांसी करना छोड़ो तो दर्शन तेरा साक्षात करे
धाम अखंड है घर अपना,जहां होता कोई नहीं

4 मेहर के सागर धामधनी,तुम सहरग से नजदीक हो
आतम रोग मिटाने वाले,तुम ही तो तबीब हो
प्राणनाथ तुम प्राण प्यारे और प्यारा कोई नहीं